

अंतोमुहुत्तमञ्छणसंभवाभावादो । कुदो ? तत्थ असंखेज्जगुणवड्डीए अभावादो ।

जीवजवमज्झहेट्ठिमअट्ठाणादो उवरिमअट्ठाणस्स विसेसाहियभावपदुप्पायणट्ठं परूवणा पमाणं सेडी अवहारो\* भागाभागो अप्पाबहुगं चेदि जोगट्ठाणट्ठिवजीवे आधारं कादूण एदेसिं छणमणुयोगद्वाराणं परूवणा कीरवे । तं जहा—

जहण्णए जोगट्ठाणे अत्थि जीवा । एवं जाव उक्कस्सए वि जोगट्ठाणे जीवा अत्थि त्ति सब्वत्थ वत्तम्भं । परूवणा गदा ।

जहण्णए जोगट्ठाणे असंखेज्जा जीवा । तेसिं पमाणमसंखेज्जाओ सेडीओ । एवं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणजीवे त्ति सब्वत्थ वत्तम्भं । जहण्णजोगट्ठाणम्मि असंखेज्जसेडिमेत्ता जीवा होंति त्ति कधं णव्वदे ? उच्चदे— पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण जगपदरे भागे हिदे सब्वजोगट्ठाणाणं तसपज्जत्तजीवपमाणं होदि\* । एदम्मि तीहि जीवगुणहाणीहि सब्वजोगट्ठाण—

अधिक है । अतः वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित रहना सम्भव नहीं है, क्योंकि, वहां असंख्यातगुणवृद्धि नहीं पाई जाती ।

अब जीवयवमध्यके पिछले स्थानसे आगेका स्थान विशेष अधिक है, इस बातका कथन करनेके लिये प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, इन छह अनुयोगद्वारोंकी योगस्थानोंमें स्थित जीवोंको आधार करके प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—

जघन्य योगस्थानमें जीव हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके प्राप्त होने तक सब योगस्थानोंमें जीव हैं, ऐसा सर्वत्र कथन करना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघन्य योगस्थानमें असंख्यात जीव हैं । उनका प्रमाण असंख्यात जगश्रेणियां है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके प्राप्त होने तक सर्वत्र जीवोंकी संख्या कहनी चाहिये ।

शंका— जघन्य योगस्थानमें असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जीव हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इस शंकाका उत्तर कहते हैं । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका जग-प्रतरमें भाग देनेपर सब योगस्थानोंमें स्थित त्रस पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है । इसमें समस्त योगस्थान अध्वानके असंख्यातवें भाग प्रमाण तीन जीवगुणहानियोंके

\* सप्रतो ' सेडीए अवहारो ' इति पाठः ।

\* आवलिअसंखसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं । कमसो तसत्पुण्णा पुण्णतसा अपुण्णा हु ॥  
गो. जी. २११.

द्वाणस्स असंखेज्जदिभागेहि भागे हिदे\* असंखेज्जसेडिमेत्ता जवमज्जजीवा आग-  
च्छंति, सब्वजीवे जवमज्जपमाणेण कीरमाणे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवज्जपमाणुवलं-  
भादो । हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ० विरलिय विगुणिय अण्णोणव्भत्थरासिणा  
तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे जोगट्टाणद्वाणादो✠ असंखेज्जगुणो सेडोए असंखेज्जदिभागे  
होदि । तेण तसपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जदिसेडिमेत्ता जहण्णजोगट्टाण-  
जीवा आगच्छंति, जगपवरभागहारस्स सेडोए असंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो । एदेणुव-  
देसेण उक्कस्सजोगट्टाणजीवा वि असंखेज्जसेडिमेत्ता त्ति साहेदव्वा । जहण्णुवकस्स-  
जोगट्टाणजीवपमाणे असंखेज्जसेडित्तेण सिद्धे सब्वजोगट्टाणजीवपमाणं असंखेज्जसे-  
डित्तेण सिद्धं चेव, तत्तो इदरेसि जीवाणं बहुत्तुवलंभादो । पमाणपरुवणा गदा ।

कालका भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण यत्रमध्यके जीव आते हैं, क्योंकि, सब  
जीवोंको यवमध्यमें स्थित जीवोंके प्रमाणसे करनेपर तीन गुणहानियोंका जितना काल है  
उतने यवमध्य प्राप्त होते हैं । पिछली नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणित  
करनेपर अन्योन्याभ्यस्त राशि होती है । इससे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर  
योगस्थानकाल असंख्यातगुणा हो कर भी जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग होता है ।  
उसका त्रस पर्याप्त राशिमें भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जघन्य योगस्थान-  
स्थित जीव आते हैं, क्योंकि, यहापर जगप्रतरका भागहार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग  
पाया जाता है । इस प्रकार इस उद्देशसे उत्कृष्ट योगस्थानके जीव भी असंख्यात जग-  
श्रेणि प्रमाण होते हैं, ऐसा सिद्ध कर लेना चाहिये । इस प्रकार जघन्य व उत्कृष्ट  
योगस्थानके जीवोंकी संख्या असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण सिद्ध हो जानेपर सब योगस्थानोंके  
जीवोंकी संख्या असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण सिद्ध ही है, क्योंकि, उक्त दो स्थानोंके  
जीवोंकी संख्याकी अपेक्षा इतर योगस्थानोंके जीवोंकी संख्या बहुत पाई जाती है ।

विशेषार्थ— यहां त्रस पर्याप्त सम्बन्धी कुल योगस्थानोंमें अलग अलग और  
मिलकर कितने जीव हैं, यह बतलाते हुए सर्वप्रथम जघन्य आदि प्रत्येक योगस्थानके  
जीवोंकी संख्याकी सिद्धि की गई है और उस परसे त्रसपर्याप्त सम्बन्धी सब योगस्थानोंके  
जीवोंकी संख्या फलित की गई है । आबलिके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलमें भाग देनेपर  
जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देनेसे त्रसपर्याप्तराशि प्राप्त होती है, ऐसा नियम  
है । फिर भी यह राशि जगश्रेणियोंकी अपेक्षा कितनी जगश्रेणि प्रमाण है, यह देखना है ।  
ऐसा मोटा नियम है कि समस्त त्रसपर्याप्तराशिमें तीन जीवगुणहानियोंके आयाम भाग

\* अप्रतो ' असंखेज्जदिभागे हिदे ' इति पाठः ।

० अ-काप्रत्योः ' -सलागावो ' इति पाठः ।

✠ प्रतिषु ' जोगट्टाणद्वाणुववत्तीदो असंखेज्जगुणे ' इति पाठः ।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिघा परंपरोवणिघा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिघा ताव उच्चदे । तं जहा— जीवगुणहाणि— सलागाहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताहि तेरासियकमेण सब्वजोगट्टाण— द्ढाणे भागे हिदे एगगुणहाणी आगच्छदि । तं विरलेदूण जहण्ण—

देनेपर यवमध्यके जीव आते हैं । उदाहरणार्थ अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा तीन जीवगुणहानियोंका काल १२ है और त्रस पर्याप्तराशिका प्रमाण १४२२ है । अतः इस राशिमें कुछ कम १२ का अर्थात्  $\frac{9}{12}$  का भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण १२८ होता है जो अर्थ—संदृष्टिकी अपेक्षा असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है । यहां यद्यपि मूलमें तीन गुणहानियोंके कालका भाग दिलाया गया है पर वह स्थूल कथन है । सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेपर कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालका भाग दिलानेपर ही यह संख्या प्राप्त होती है, ऐसा यहां समझना चाहिये । इस प्रकार जब कि त्रस पर्याप्तराशिमें कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालका भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण आता है तो उस राशिको यवमध्यके जीवोंके प्रमाण रूपसे करनेपर वह कुछ कम तीन गुणहानियोंकी जितनी संख्या होगी उतने यवमध्य प्रमाण प्राप्त होगी, इसमें जरा भी मन्देह नहीं । अब यह देखना है कि इस राशिमेंसे जघन्य योगस्थानको प्राप्त कितने जीव हैं । इसके लिये यह नियम है कि अधस्तन गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालको गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उसका समस्त त्रस पर्याप्तराशिमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आता है । उदाहरणार्थ अधस्तन गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि ८ है । इससे कुछ कम तीन गुणहानियोंके काल  $11\frac{9}{12}$  को गुणित करनेपर  $11\frac{9}{12}$  प्राप्त होते हैं, और इसका सब त्रस पर्याप्तराशि १४२२ में भाग देनेपर १६ प्राप्त होते हैं जो सबसे जघन्य त्रस पर्याप्त योगस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है । सबसे उत्कृष्ट त्रस पर्याप्त योगस्थानवाले जीवोंका प्रमाण भी इसी प्रकार ले आना चाहिये । अतः यह राशि असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है, क्योंकि, जगप्रतरमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर यह राशि आती है । अतः सम्पूर्ण त्रस पर्याप्त राशि असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है, यह अपने आप सिद्ध हो जाता है । ( कर्मकाण्ड गा. २४५-२४६ )

इस प्रकार प्रमाण प्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमेंसे अनन्तरोपनिधाको कहते हैं । वह इस प्रकार है— पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवगुणहानिशलाकाओंका त्रैराशिकक्रमसे समस्त योगस्थान अध्वानमें भाग देनेपर एक आयाम गुणहानि आती है । उसका विरलन कर प्रत्येक एकपर जघन्य योगस्थानके जीवोंको

जोगट्टाणजीवेसु समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जीवपक्खेवपमाणं पावदि । एत्थ जीवपक्खेवपमाणानुगमं कस्सामो । तं जहा— जवमज्जादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसला-  
गाणमण्णोण्णम्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे जोगट्टाणट्टाणादो असंखेज्ज-  
गुणत्तं पत्तेण तसपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे जहण्णजोगट्टाणजीवा असंखेज्जसेडिमेत्ता  
आगच्छंति । तासिं सेडीणं विक्खंभसूची सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता । कध-  
मेदं णव्वदे ? जोगट्टाणट्टाणागमणहेट्टुजगसेडिभागहारम्मि सेडीए असंखेज्ज-  
दिभागत्तुवलंभादो । तं पि कुवो णव्वदे ? सब्वजोगट्टाणाणि जहण्णजोगट्टाण-  
जहण्णफट्टयपमाणेण काट्टूण तत्थेगफट्टयवगणसलागाहि सेडीए असंखेज्जदि-

समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— जीवगुणहानिशलाका ८; सब योगस्थानोंका काल ३२; जघन्य योगस्थानके जीव १६;

$$३२ \div ८ = ४ \text{ एक गुणहानिका काल;}$$

४४४४  
११११ जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त हुआ ।

अब यहां जीवप्रक्षेपके प्रमाणका विचार करते हैं । वह इस प्रकार है— यव-  
मध्यसे पहलेकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको  
गुणित करनेपर योगस्थानके कालसे असंख्यातगुणा प्राप्त होता है, फिर उसका त्रस  
पर्याप्तराशिमें भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जघन्य योगस्थानके जीव आते  
हैं । उन श्रेणियोंकी विष्कम्भसूची जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उदाहरण— अधस्तन नानागुणहानिशलाका ३, व उसकी अन्योन्याभ्यस्त राशि  
(२×२×२) = ८ तीन गुणहानियोंका काल १२; त्रस पर्याप्तराशि १४२२;

१२×८ = ९६; कुछ कम इसका अर्थात् ८८<sup>१</sup> का १४२२ में भाग देनेपर जघन्य  
योगस्थानोंके जीवोंका प्रमाण १६ प्राप्त हुआ ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, योगस्थान सम्बन्धी कालके लानेके लिये निमित्तभूत जो  
जगश्रेणिका भागहार है वह जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग पाया जाता है ।

शंका— वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, सब योगस्थानोंको जघन्य योगस्थानके जघन्य स्पद्धकोंके  
प्रमाण रूपसे कके उसमें एक स्पद्धककी श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण वर्गणा-

भागमेत्ताहि तम्हि गुणिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चव वग्गणाओ होंति त्ति गुरुवदेसादो ।

एत्थ सब्वजोगट्टाणवग्गणाणयणविहाणं उच्चदे । तं जहा— रूवूणजोगट्टाणद्वाणं सयलजोगट्टाणद्वाणेण गुणिय अद्धिय ॐ पुणो पक्खेवफद्दयसलागाहि अंगुलस्स असंखे— ज्जदिभागमेत्ताहि गुणिय तम्हि जहण्णजोगट्टाणजहण्णफद्दयसलागाओ जोगट्टाणध्दाणगुणिदाओ पक्खित्ते सब्वजोगट्टाणाणं जहण्णफद्दयसलागाओ होंति । पुणो ताओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तएगफद्दयवग्गणसलागाहि गुणिदे सब्ववग्गणाओ आगच्छंति । एसा रासी सब्वो वि सेडीए असंखेज्जदिभागो । एत्थ जइ जोगट्टाणध्दाणागमणट्ठं सेडीए ठविदभागहारो सेट्ठिपढमवग्गमूलमेत्तो होज्ज तो जोगट्टाणध्दाणं वग्गिदे जगसेडी उप्पज्जेज्ज । अह जइ दुगुणो तो जोगट्टाणध्दाणं वग्गिय चदुगुणिदे जगसेडी होज्ज । अह चउगुणो, वग्गिय सोलसेहि गुणिदे सेडी होज्ज । एवं संखेज्जासंखेज्जेमु णेदव्वं जाव संदेहविच्छेदो त्ति । णवरि एत्थ जोगट्टाणध्दाणं वग्गिय सेडीए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे वि जगसेडी ण उप्पण्णा, तिस्से असंखे—

शलाकाओंसे सब योगस्थानोंको गुणित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र ही वर्गणायें प्राप्त होती हैं, इस गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि योगस्थानोंका काल लानेके लिये जगश्रेणिका भागहार जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है ।

यहां सब योगस्थानोंकी वर्गणाओंके लानेका विधान कहते हैं । वह इस प्रकार है— एक कम योगस्थानके कालको समस्त योगस्थानके कालसे गुणित करके आधा कर फिर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र प्रक्षेप—स्पर्धक—शलाकाओंसे गुणित करके उसमें योगस्थानके कालसे गुणित जघन्य योगस्थानकी जघन्य स्पर्धकशलाकाओंका प्रक्षेप करनेपर समस्त योगस्थानोंकी जघन्य स्पर्धकशलाकायें होती हैं । पुनः उनको श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंसे गुणित करनेपर समस्त वर्गणायें आती हैं । यह सभी राशि श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यहां योगस्थानका काल लानेके लिये श्रेणिका जो भागहार स्थापित किया जाय वह यदि जगश्रेणिके प्रथम वर्गमूल प्रमाण होवे तो योगस्थानोंके कालको वर्गित करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । अथवा, यदि वह भागहार श्रेणिके प्रथम वर्गमूलसे दुगुणा होवे तो योगस्थानके कालको वर्गित कर चारसे गुणा करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । अथवा, यदि वह भागहार श्रेणिके प्रथम वर्गमूलसे चौगुणा होवे तो योगस्थानोंके कालको वर्गित करके सोलहसे गुणित करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । इस प्रकार संशयके दूर होने तक संख्यातगुणे व असंख्यातगुणे तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां योगस्थानोंके कालको वर्गित कर श्रेणिके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर भी जगश्रेणि उत्पन्न नहीं हुई, किन्तु उसका असंख्यातवां भाग ही उत्पन्न हुआ । इससे जाना जाता है कि जगश्रेणिका

ज्जदिभागो चेवुप्पणो । एदेण णव्वदि\* जहा सेडीए असंखेज्जदिभागो होंतो† वि पढमवग्गमूलं सेडीए असंखेज्जदिभागेण गुणिदमेत्तो सेडिभागहारो होदि त्ति । जहण्णजोगट्टाणजीवभागहारमेग्गुणहाणिणा गुणिदे जोगट्टाणट्टाणवग्गो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदो जेण उप्पज्जदि तेणेदेण तसजीवरासिम्ह भागे हिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजगसेडीओ जीवपक्खेवपमाणाओ उप्पज्जंति त्ति सिद्धं । एवं जीवपक्खेवपमाणं पहरुविदं ।

संपहि अणंतरोवणिधाए अवट्ठिदभागहारो रूवाहियभागहारो रूवूणभाग-  
हारो छेदभागहारो त्ति एदेहि चदुहि भागहारेहि जोगट्टाणजीवा उप्पाएदव्वा । तं  
जहा— तत्थ ताव अवट्ठिदभागहारादो उप्पत्ति भण्णमाणे सेडीए असंखेज्जदिभागमे-  
ग्गुणहाणिं विरलिय जहण्णजोगट्टाणजीवे समभागं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि  
एग्गजीवपक्खेवपमाणं पावदि । तत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णजोगट्टाणजीवे  
पडिरासिय तत्थ पक्खित्ते बिदियजोगट्टाणजीवपमाणं होदि । एवं पडिरासिय  
बिदियपक्खेवे पक्खित्ते तदियजोगट्टाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदव्वं जाव विर-  
लणरासिमेत्तजीवपक्खेवा सव्वे पइट्टा त्ति । ताधे दुग्गुणवड्ढी होदि, जहण्ण-

भागहार जगश्रेणिके असंख्यातवे भाग प्रमाण होता हुआ भी वह जगश्रेणिके प्रथम  
वर्गमूलको जगश्रेणिके असंख्यातवे भागसे गुणित करनेपर जितना लब्ध आवे उतना है ।  
जघन्य योगस्थानके जीवभागहारको एक गुणहानिसे गुणित करनेपर योगस्थानकालका  
वर्ग पल्योपमके असंख्यातवे भागसे गुणित होकर चूक उत्पन्न होता है अतः इसका  
त्रसजीवराशिमें भाग देनेपर श्रेणिके असंख्यातवे भाग मात्र जगश्रेणिया जीवप्रक्षेप  
प्रमाण उत्पन्न होती हैं, यह सिद्ध है । इस प्रकार जीवप्रक्षेपप्रमाणकी प्ररूपणा की ।

अब अनन्तरोपनिधाके आधारसे अवस्थित भागहार, रूपादिक भागहार, रूपोन  
भागहार और छेदभागहार, इन चार भागहारों द्वारा योगस्थानोंके जीवोंको उत्पन्न  
कराना चाहिये । यथा— वहां प्रथमतः अवस्थित भागहारके आधारसे योगस्थानोंके  
जीवोंकी उत्पत्तिका कथन करनेपर जगश्रेणिके असंख्यातवे भाग प्रमाण एक गुणहानिका  
विरलन कर जघन्य योगस्थानके जीवोंको समभाग करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति  
एक एक जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर उनमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर  
जघन्य योगस्थानके जीवोंको प्रतिराशि कर उसमें प्रक्षिप्त करनेपर द्वितीय योगस्थानके  
जीवोंका प्रमाण होता है । फिर इसको प्रतिराशि करके इसमें द्वितीय प्रक्षेपके मिलानेपर  
तृतीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार विरलन राशि प्रमाण सब जीव-  
प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । उस समय दुग्गुणी वृद्धि होती है, क्योंकि,

जोगट्टाणजीवाणमुवरि तेत्तियमेत्ताणं चेव पवेसदंसणादो । पुणो दुगुणवड्डिजीवेसु तिस्से चेव विरलणाए समखंडं करिय दिण्णेषु रूवं पडि पक्खेवपमाणं पावेदि । णवरि पुब्बिल्लपक्खेवादो संपहियपक्खेवो दुगुणो, विहज्जमाणरासिदुगुणत्तादो । एदम्मि पक्खेवे दुगुणवड्डिजीवे पडिरासिय पक्खित्ते तदणंतरउवरिम-जोगट्टाणजीवपमाणं होदि । एवं पडिरासिय विदियपक्खेवे पक्खित्ते तत्तो अणंतर-उवरिमजोगट्टाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदम्बं जाव जवमज्जे त्ति । णवरि जीव-पक्खेवा पढमगुणहाणिप्पहुडि उवरि सब्वत्थ गुणहाणिं पडि दुगुण-दुगुणा त्ति वत्तव्वा, अवट्ठिदभागहारत्तादो । तेणेव कारणेण गुणहाणिअट्ठाणं पि अवट्ठिद-भावेण दट्ठम्बं ।

जघन्य योगस्थानके जीवोंके ऊपर उतने मात्र अंकोंका ही प्रवेश देखा जाता है । फिर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए जीवोंको उसी विरलनपर समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति दूसरे प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । विशेष इतना है कि पूर्वोक्त प्रक्षेपसे यह प्रक्षेप दुगुणा है, क्योंकि, जो राशि विभक्त करके विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति दी गई है वह दूनी है । इस प्रक्षेपको दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए जीवोंको प्रतिराशि करके उसके ऊपर देनेपर उससे आगेके उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इसको प्रतिराशि करके इसमें द्वितीय प्रक्षेपके मिलानेपर उससे आगेके उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि जीवप्रक्षेप प्रथम गुणहानिसे लेकर ऊपर सर्वत्र प्रत्येक गुणहानिके प्रति दुगुणे दुगुणे होते जाते हैं, ऐसा यहां कहना चाहिये; क्योंकि, प्रक्षेपका प्रमाण लानेके लिये जो भागहारका प्रमाण कहा है वह सर्वत्र अवस्थित अर्थात् एक रूप है और इसी कारणसे गुणहानिके कालको भी अवस्थित रूपसे जानना चाहिये ।

विशेषार्थ- अंकसंदिष्टिकी अपेक्षा उक्त विषयका खुलासा इस प्रकार है- गुण-हानिका काल ४ है । इसका १ १ १ १ इस प्रकार विरलन करके उस पर जघन्य योग-स्थानके जीव १६ को विभक्त कर ४ ४ ४ ४ इस क्रमसे स्थापित करनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति ४ प्राप्त होते हैं । प्रथम प्रक्षेपका यही प्रमाण है । इसे १६ में मिलानेपर २० यह दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है । इसमें ४ के मिलानेपर २४ यह तीसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है । इस प्रकार जीवोंकी संख्याकी दूनी वृद्धि होने तक यही क्रम जानना चाहिये । फिर गुणहानिके कालका पूर्ववत् विरलन करके उसपर अन्तमें प्राप्त ३२ इस संख्याको विभक्त कर क्रमसे स्थापित करना चाहिये । इससे द्वितीय प्रक्षेपका प्रमाण ८ उत्पन्न होता है । इस प्रकार यवमध्यके जीवोंकी संख्या १२८ उत्पन्न होने तक यही क्रम जानना चाहिये । अतः यहां भागहार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग अवस्थित रूपसे सर्वत्र विवक्षित है । इसीलिये गुणहानिका काल भी अवस्थित रूपसे ही लिया गया है, क्योंकि, इन दोनोंका परस्परमें सम्बन्ध है ।

संपहि जीवजवमज्झस्सुवरि भण्णमाणे दुगुणो पुठ्वभागहारो विरलेदब्धो, अण्णहा जदमज्झपक्खेवाणुप्पत्तीदो । ण च अवट्ठिदभागहारपइज्जाविरोहो वि, जवमज्झस्स हेट्ठुवरिमभागसु पुध पुध अंबट्ठिददोभागहारभुवगमादो । एवं विरलिय समखंडं करिय जीवजवमज्झे दिण्णे रूवं पडि पक्खेवपमाणं होदि । पुणो जवमज्झं पडिरासिय तत्थ एगपक्खेवे अवणिदे तदणंतरजोगट्टाणं जीवपमाणं होदि । तं पडिरासिय बिदियपक्खेवे अवणिदे तदणंतरउवरिमजोगट्टाणजीवपमाणं ॐ होदि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्टाणजीवे त्ति ।

अब जीवयवमध्यके ऊपरके स्थानको कथन करनेपर पूर्व भागहारसे दुगुणे भाग-हारका विरलन करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा किये विना यवमध्यका प्रक्षेप नहीं बन सकता । दुगुणे भागहारका विरलन करनेसे अवस्थित भागहारकी प्रतिज्ञाका विरोध होगा सो भी नहीं है, क्योंकि, यवमध्यके अधस्तन और उपरिम भागोंमें पृथक् पृथक् अवस्थित रूपसे दो भागहार स्वीकार किये गये हैं । इस प्रकार इन दूने भागहारका विरलन कर समखण्ड करके जीवयवमध्यके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर यवमध्यको प्रतिराशि कर उसमेंसे एक प्रक्षेपके कम करनेपर उससे आगेके योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । उसको प्रतिराशि कर उसमेंसे द्वितीय प्रक्षेपके कम करनेपर उससे उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये ।

विशेषार्थ— पहले जो क्रम बतला आये हैं उससे जीवयवमध्यके आगेका क्रम बदल जाता है । यहां भागहारका प्रमाण पूर्वकी अपेक्षा दूना हो जाता है । जीवयव-मध्यके पहले प्रत्येक योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये भागहारका प्रमाण जग-श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण बतला आये थे । किन्तु यहां वह दूना हो जाता है, अन्यथा यवमध्यके जीवोंके आधारसे आगेके प्रक्षेपका प्रमाण नहीं लाया जा सकता है । इसपर यह शंका होती है कि जब सर्वत्र अवस्थित भागहार स्वीकार किया गया है तब फिर यहां उसे दूना कैसे किया जा सकता है । इस शंकाका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानियोंमें सर्वत्र एक भागहार स्वीकार किया गया है और आगेकी गुणहानियोंमें दूसरा भागहार स्वीकार किया गया है । इसलिये भाग-हारको अवस्थित माननेमें कोई बाधा नहीं आती । फिर भी यहां इतना विशेष समझना चाहिये कि यवमध्यमें सबसे अधिक जीव होते हैं, इसलिये यवमध्यके आगेकी गुण-हानियोंमें सर्वत्र प्रक्षेपको घटाते जाना चाहिये और प्रत्येक गुणहानिमें उसे आधा आधा करते जाना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आने तक यह क्रम जानना चाहिये ।

अधवा दोगुणहाणीओ विरलय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि जवमज्झजीवपक्खेवपमाणं पावदि । पुणो जवमज्झं त्ति प्पडिरासिये दोपासट्ठिद-जवमज्झेसु विरलणाए पढमपक्खेवे अवणिदे जवमज्झदोपासट्ठियपढमजोगट्टाण-जीवपमाणं होदि । पुणो ते दो वि पडिरासिय उभयत्थ बिदियपक्खेवे अवणिदे जव-मज्झदोपासट्ठियबिदियजोगट्टाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदब्बं जाव विरलणरासीए अद्धं खीणमिदि । तदो सेसरुद्धरिदं अद्धिय अणाहेयरुवाणं परिवाडीए दिण्णे जवमज्झं पेक्खिदूण बिदियगुणहाणीए पक्खेवो होदि, पुठ्विल्लपक्खेवस्स दुभागत्तादो । एदे पक्खेवे पुव्वं व अवणिय णेदब्बं जाव बिदियगुणहाणिचरिमणिसेयो त्ति । एवं जाणिदूण णेदब्बं जाव जहणजोगट्टाणजीवपमाणं दोसु वि पासेसु पत्तमिदि । पुणो हेट्टा ण णिज्जदि, ततो परं बोइंदियपज्जत्तजोगट्टाणाभावादो । उवरि पुव्वं व असंखेज्जगुणहाणीओ हेट्टिमगुणहाणीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुणो वि णेदब्बाओ जाव उक्कस्सजोगट्टाणजीवपमाणं पत्तमिदि । एवं कदे जवमज्झदोसु वि पासेसु एक्को अवट्ठिदभागहारो सिद्धो ।

अथवा, दो गुणहानियोंका विरलन कर यवमध्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति यवमध्य जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर यवमध्यको प्रतिराशि करके पार्श्वमें स्थित दो योगस्थानोंके जीवोंकी अपेक्षा दो यवमध्योंमेंसे विरलनाके प्रथम प्रक्षेपको कम करनेपर यवमध्यके दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित प्रथम योगस्थानोंके जीवोंका प्रमाण होता है । फिर उन दोनोंको ही प्रतिराशि करके उभय राशियोंमेंसे द्वितीय प्रक्षेपको कम करनेपर यवमध्यके दोनों पार्श्वोंमें स्थित द्वितीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार विरलन राशिके अर्ध भागके क्षीण होने तक ले जाना चाहिये । तत्पश्चात् विरलन राशिके शेष अंकोंपर स्थित राशिको आधा करके अनाहेय अंकोंको परिपाटीसे देनेपर यवमध्यकी अपेक्षा द्वितीय गुणहानिका प्रक्षेप होता है, क्योंकि, यह पूर्वोक्त प्रक्षेपसे आधा है । फिर इन प्रक्षेपोंको पहलेके समान दूसरी गुणहानिके अन्तिम निषेकके प्राप्त होने तक घटाते हुए ले जाना चाहिये । इस प्रकार जानकर दोनों ही पार्श्वभागोंमें जघन्य योग-स्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर नीचे नहीं ले जाया जा सकता है, क्योंकि, उससे आगे द्वीन्द्रिय पर्याप्तके योगस्थान नहीं पाये जाते । किन्तु ऊपर पूर्वके समान अधस्तन गुणहानियोंके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात गुण-हानियोंको उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार करनेपर यवमध्यके दोनों ही पार्श्वभागोंमें एक अवस्थित भागहार सिद्ध होता है ।

संपहि रूवाहियभागहारेण अणंतरोवणिधा वृच्चदे— गुणहाणिणा जहणजोगट्टाणजीवेसु भागे हिदेसु पक्खेवो लब्भदि । तं पडिरासिदजहणजोग-ट्टाणजीवेसु पक्खित्ते विदियट्टाणजीवा होंति । पुणो रूवाहियपुव्वभागहारेण विदियट्टाणजीवे खंडिय तत्थेगखंडे तं चेव पडिरासिय पक्खित्ते तदियट्टाण-जीवपमाणं होदि । पुणो अणंतरहेट्ठिमभागहारेण रूवाहिएण एदं खंडिय लद्धे पडिरासिदजीवेसु पक्खित्ते चउत्थट्टाणजीवा होंति । एवं णेदव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढि त्ति । एवं पत्तेयं पत्तेयं जवमज्झहेट्ठिमसव्वगुणहाणीणं रूवाहियभागहारो परूवेदव्वो । कुदो सगगुणहाणिणियमो रूवाहियभागहारस्स ? गुणहाणिं पडि पक्खेवाणं तुल्लत्ताभावादो ।

विशेषार्थ— पहले यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानियोंमें प्रारम्भसे प्रत्येक योगस्थान के जीवोंकी संख्यामें प्रक्षेपको जोडते हुए यवमध्य तकके जीवोंकी संख्या उत्पन्न करके बतलाई गई थी और यवमध्यसे आगे सर्वत्र प्रक्षेपको घटानेकी प्रक्रियाके निर्देश द्वारा उत्कृष्ट योगस्थान तकके जीवोंकी संख्या निकाल कर बतलाई गई थी । किन्तु यहां यवमध्यसे दोनों ओर प्रक्षेपको घटाते हुए किस प्रकार प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्या आती है, इस विधिका निर्देश किया गया है । प्रारम्भमें यहां दो गुणहानियोंके कालका विरलन करा कर यवमध्यके जीवोंको समविभक्त कर दिया गया है और एक विरलनके प्रति जितनी संख्या प्राप्त हो उतनी संख्या दोनों ओर क्रमशः घटाई गई है । किन्तु यह क्रम आधे विरलनोंके समाप्त होनेतक ही चालू रखा गया है । आगे प्रत्येक गुणहानिमें प्रक्षेपका प्रमाण आधा आधा होता गया है और इस प्रकार दोनों ओर गुणहानिके अनुसार प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्या लाई गई है । यह सब इसलिये किया गया है, क्योंकि इसमें भागहारका प्रमाण नहीं बदलता है ।

अब रूपाधिक भागहारके आधारसे अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं— गुणहानिके कालका जघन्य योगस्थानके जीवोंमें भाग देनेपर प्रक्षेप प्राप्त होता है । उसे प्रतिराशि रूपसे स्थित जघन्य योगस्थानके जीवोंमें मिलानेपर द्वितीय स्थानके जीव होते हैं । पुनः एक अधिक पूर्व भागहारसे द्वितीय स्थानके जीवोंको भाजित कर उनमें एक खण्डको उसी दूसरे स्थानकी राशिको ही दूसरी राशि बनाकर उसमें मिला देनेपर तृतीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । फिर एक अधिक अनन्तर अधस्तन भागहारसे इस दूसरे स्थानकी राशिको खण्डित कर जो प्राप्त हो उसे प्रतिराशि रूपसे स्थापित तीसरे स्थानके जीवोंमें मिला देनेपर चतुर्थ स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार प्रथम स्थानसे दुगुणी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार यवमध्यकी अधस्तन सब गुणहानियोंका अलग अलग एक एक गुणहानिके प्रति एक अधिकके क्रमसे भागहार कहना चाहिये ।

शंका— रूपाधिक भागहारके लिये अपनी गुणहानिका नियम कैसे है ?

समाधान— क्योंकि, प्रत्येक गुणहानिके प्रक्षेप एक समान नहीं हैं, इसलिये रूपाधिक भागहारके लिये अपनी गुणहानिका नियम बन जाता है ।

एवं उर्वारिं पि वत्तब्बं । णवरि उक्कस्सजोगट्टाणजीवे रूवाहियगुणहाणिणा खंडिय लद्धे पडिरासिदउक्कस्सजोगट्टाणजीवेसु पक्खित्ते दुचरिमजोगट्टाणजीवा होंति त्ति वत्तब्बं ।

संपहि रूवूणभागहारेण अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा— दोगुणहाणीहि जव—

इसी प्रकार आगे भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको एक अधिक गुणहानिसे खण्डित करके जो लब्ध आवे उसे प्रतिराशि रूपसे स्थापित उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंमें मिलानेपर द्विचरम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा कहना चाहिये ।

विशेषार्थ— यहां रूपाधिक भागहारके क्रमसे प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्या लाई गई है । सर्वप्रथम गुणहानिके कालका जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें भाग देकर प्रथम प्रक्षेप प्राप्त किया गया है और इसे जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें मिलाकर दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्या प्राप्त की गई है । फिर इस प्रक्षेपमें एक मिलाकर उसका भाग दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्यामें देकर दूसरा प्रक्षेप प्राप्त किया गया है और उसे दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्यामें मिलाकर तीसरे स्थानकी संख्या प्राप्त की गई है । उदाहरणार्थ, गुणहानिके काल ४ का जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देने पर ४ लब्ध आते हैं । अतः यह प्रथम प्रक्षेप हुआ । इसे जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में मिला देनेपर दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २० होती है । फिर पूर्व प्रक्षेप ४ में १ मिलाकर ५ का २० में भाग देना चाहिये और इस प्रकार जो पुनः ४ लब्ध आवे उसे दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २० में मिला देनेसे तीसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २४ होती है । इस प्रकार यह क्रम सर्वत्र जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि यद्यमध्यके आगे पूर्वके समान वहांके अनुरूप प्रक्षेप प्राप्त करके घटाते जाना चाहिये । किन्तु अन्तिम गुणहानिमें अन्तिम स्थानसे पीछेकी तरफ प्रक्षेपका निक्षेप करते हुए लौटना चाहिये । वहां अन्तके स्थानके जीवोंकी जो संख्या हो उसमें एक अधिक गुणहानिके कालका भाग देकर प्रक्षेप प्राप्त करना चाहिये और उसे मिलाते हुए गुणहानिके प्रथम स्थान तक आना चाहिये । उदाहरणार्थ, अन्तिम गुणहानिके अन्तिम स्थानके जीवोंकी संख्या ५ है । इसमें १ अधिक गुणहानिके काल अर्थात् ५ का भाग देकर १ संख्या प्रमाण प्रक्षेप प्राप्त होता है । इसे अन्तिम स्थानके जीवोंकी संख्यामें मिला देनेपर द्विचरम योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है । इसी प्रकार आगे भी एक-एक मिलाते जाना चाहिये । यहां सर्वत्र पूर्व प्रक्षेपमें एक एक बढ़ा कर उसके भाग द्वारा नया प्रक्षेप प्राप्त है, इसलिये इसे रूपाधिक भागहार कहा है ।

अब रूपोन भागहारके द्वारा अनन्तरोपनिधानका कथन करते हैं । वह इस प्रकार

मज्झं खंडिय लद्धे जवमज्झादो अवणिदे तस्स दोपासट्टिदजीवपमाणं होदि । पुणो पुव्विल्लभागहारादो रूवूणेण भागहारेण पुध पुध दोपासट्टिदजीवणिसेगे खंडिय अवणिदे तदियणिसेगा होंति । एवं णेदव्वं जाव दोसु वि पासेसु गुणहाणिअट्टाणं समत्तं त्ति । एवं सेसहेट्टिम-उवरिमगुणहाणीणं पि वत्तव्वं, विसेसाभावादो । रूवूण-भागहारस्म एगगुणहाणिणियमत्ते कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

छेदभागहारेण अणंतरोत्रणिधा वुच्चदे । तं जहा— पक्खेवभागहारेण जहण्णजोगट्टाणजीवे खंडिय लद्धे तत्थेव पक्खित्ते बिदियट्टाणजीवा होंति । पुणो पुव्वभागहारदुभागेण जहण्णट्टाणजीवेसु अवहिरिदेसु दो पक्खेवा लब्भंति । तेसु तत्थेव पक्खित्तेसु तदियट्टाण जीवा

है - दो गुणहानियोंसे यवमध्यको खण्डित कर प्राप्त राशिको यवमध्यमेंसे घटानेपर उसके दोनों पार्श्वोंमें स्थित जीवोंका प्रमाण होता है । फिर पूर्वोक्त भागहारसे एक कम भागहार द्वारा पृथक् पृथक् दोनों पार्श्वस्थ जीवनिषेकोंको खण्डित कर प्राप्त राशिको उभय पार्श्वस्थ जीवनिषेकोंमेंसे कम करनेपर तृतीय स्थानके निषेक होते हैं । इस प्रकार दोनों ही पार्श्वभागोंमें गुणहानिके कालके समाप्त होने तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार शेष अधस्तन व उपरिम गुणहानियोंका भी कथन करना चाहिये, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है । रूपोन भागहारकी एक गुणहानिनियमतामें कारण पूर्वके ही समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ— आशय यह है कि जहां विवक्षित भागहारमेंसे एक कम करके उससे आगेके स्थानकी संख्या प्राप्त की जाती है वह रूपोन भागहार होता है । उदाहरणार्थ दो गुणहानियोंके काल ८ से यवमध्य १२८ के भाजित करनेपर प्राप्त हुई राशि १६ को यवमध्यमेंसे घटा देनेपर पार्श्वस्थ दोनों राशियां ११२, ११२ प्राप्त होती हैं । फिर पूर्वोक्त भागहारमेंसे एक कम करके सात का भाग उक्त दोनों राशियोंमें देनेपर जो १६ लब्ध आये उसे घटा देनेपर तीसरे स्थानकी राशि ९६ प्राप्त होती है । फिर इस भागहारमेंसे १ कम करके ६ का भाग ९६ में देनेपर जो १६ लब्ध आये उसे घटा देनेपर चौथे स्थानकी राशि ८० प्राप्त होती है । इसी प्रकार रूपोन भागहारके द्वारा सब स्थानोंकी संख्या ले आनी चाहिये ।

अब छेदभागहार द्वारा अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— प्रक्षेपभागहारसे जघन्य योगस्थानके जीवोंको खण्डित कर लब्ध राशिको उसीमें मिला देनेपर द्वितीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः पूर्व भागहारके द्वितीय भागका जघन्य स्थानके जीवोंमें भाग देनेपर दो प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उनको उक्त जीवोंमें मिला

होति । पुव्वभागहारतिभागेण भागे हिंदे तिण्णि पक्खेवा लब्भंति । तेसु तत्थेव पक्खित्तेसु♠ चउत्थट्टाणजीवा होति । एवं णेदव्वं जाव गुणहाणिअट्टाणं समत्तमिदि❁ । एवं सब्वगुणहाणीणं पि छेदभागहारो जोजेयव्वो ।

परंपरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा— जहण्णजोगट्टाणजीवेहंतो सेडीए असंखेज्ज-दिभागं गंतूण जीवा दुगुणा होति । पुणो वि तेत्तियं चेव अट्टाणं गंतूण जीवाणं दुगुणवड्ढी होदि । एवं णेयव्वं जाव जवमज्जे त्ति । तदो उवरि तेत्तियं चेव अट्टाणं गंतूण जीवाणं दुगुणहाणी । एवं णेदव्वं जाव उक्क-स्सजोगट्टाणजीवे त्ति । एगजीवदुगुणहाणिमेत्तट्टाणं गंतूण जदि एगा① गुणहाणिसलागा लब्भदि तो सब्वजोगट्टाणट्टाणम्मि किं लब्भदि त्ति गुण—

देनेपर तृतीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः पूर्व भागहारके त्रिभागका भाग देनेपर तीन प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उनको उक्त जीवोंमें मिला देनेपर चतुर्थ स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार गुणहानिके जितने स्थान हैं उनके समाप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार सब गुणहानियोंके छेदभागहारको देखना चाहिये ।

विशेषार्थ— अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा प्रक्षेपभागहारका प्रमाण चार है । इसका जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देनेपर ४ ही लब्ध आते हैं । अतः इसे १६ में मिला देनेपर दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्या २० आती है । फिर पूर्वोक्त भागहार ४ के आधे अर्थात् २ का जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देनेपर प्राप्त हुए दो प्रक्षेप ८ को जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में मिला देनेपर तीसरे स्थानकी संख्या २४ आती है । फिर पूर्वोक्त भागहारके तीसरे भाग  $\frac{2}{3}$  का भाग जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें देनेपर प्राप्त हुए तीन प्रक्षेप १२ को पूर्वोक्त राशि १६ में मिला देनेपर चौथे स्थानकी संख्या २८ आती है । इसी प्रकार सब गुणहानियोंमें जानना चाहिये ।

अब परम्परोपनिघाका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानके जीवोंसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थान जाकर जीव दुगुणे होते हैं । फिर भी उतने ही स्थान जानेपर जीवोंकी दुगुणी वृद्धि होती है । इस प्रकार यवमध्य तक ले जाना चाहिये । उससे आगे उतने ही स्थान जाकर जीवोंकी दुगुणी हानि होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंकी संख्या प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । एक जीव दुगुणहानि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो सब योगस्थान अध्वानमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार गुणहाणिका फल राशिसे गुणित इच्छा

♠ प्रतिषु ' ते तत्थेव पक्खित्ते ' इति पाठः ।

① अ प्रतो ' एगो ' इति पाठः ।

❁ प्रतिषु ' सब्वत्तमिदि ' इति पाठः ।

⊗ प्रतिषु ' जदि एसो गुण- ' इति पाठः ।

हाणिणा फलगुणिदिच्छाए अवहिरिदाए सब्वगुणहाणिसलागाओ आगच्छंति ।  
एदाओ दुगुणवृद्धिसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । कुदो णव्वदे ?  
परमगुरुवदेसादो ।

एत्थ तिण्णि अणुओगद्वाराणि परूवणा पमाणं अप्पाबहुगं चेदि । परूवणा  
सुगमा । पमाणं— णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ\* ।  
एगगुणहाणी सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता~~ओ~~, णाणागुणहाणिसलागाहि जोगट्टाणद्धाणे  
ओवट्टिदे तदुवलंभादो ।

अप्पाबहुगं— सब्वत्थोवाओ जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ । उवरिमाओ

राशिमें भाग देनेपर सब गुणहानिशलाकायें आती हैं । ये दुगुणवृद्धिशलाकायें पत्योपमके  
असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

विशेषार्थ— जहां परम्परासे हानि या वृद्धि प्राप्त की जाती है उसे परम्परोपनिधा  
कहते हैं । प्रकृतमें इसी बातका निर्देश किया गया है । पहले एक गुणहानिसे दूसरी  
गुणहानिमें जीवोंकी संख्या किस प्रकार दूनी दूनी होती जाती है, इसका निर्देश किया गया  
है और बादमें जीवव्यवमध्यसे लेकर वह संख्या प्रत्येक गुणहानिमें किस प्रकार आधी आधी  
होती गई है, यह बतलाया गया है और यहां परम्परासे हानि और वृद्धिके क्रमका निर्देश  
किया गया है ।



यहां तीन अनुयोगद्वार हैं— प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । प्ररूपणा सुगम  
है । प्रमाण— नानागुणहानिशलाकायें पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं और एक  
गुणहानि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंसे  
योगस्थान अध्वानके भाजित करनेपर जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग प्रमाण प्राप्त होता है ।


अल्पबहुत्व— व्यवमध्यसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकायें सबसे थोड़ी हैं ।

\* पल्लासंखेज्जदिमा गुणहाणिसला हवंति इगिठाणे । गो. क. २२४. णाणागुणहाणिसला छेदा-  
संखेज्जभागमेत्ताओ । गो. क. २४८.

✱ . . . पदेसगुणहाणी । सेद्धिअसंखेज्जदिमा . . . ॥ गो. क. २२७

विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्तेण । सव्वाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागमेत्तेण । एगगुणहाणि-अद्धानमसंखेज्जगुणं ।

एदम्हादो अवरिद्धाहरियवयणादो णज्जदे  जहा ( जीव- ) जवमज्जहेट्ठिम-अद्धानादो उवरिमअद्धानं विसेसाहियमिदि ।

एत्थतणजीवअप्पाबहुगादो वा । तं जहा— जहण्णजोगट्ठण  जहण्णजीवप्पहुडि जा

उनसे उपरिम नानागुणहानिशलाकार्ये विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? पल्योपमके असंख्यातवेन भाग प्रमाण अधिक हैं । उनसे सब नानागुणहानिशलाकार्ये विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? अधस्तन नानागुणहानिशलाका प्रमाण अधिक हैं । एक गुण-हानिका अध्वान असंख्यातगुणा है ।

इस प्रकार इस अवरिद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है कि जीवयवमध्यके अधस्तन स्थानसे उपरिम स्थान विशेष अधिक है ।

विशेषार्थ— यहां ' एवं संसरिदूण त्थोवावसेसे जीविदम्बए ' इत्यादि सूत्रकी व्याख्या चालू है । इसमें ' योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ' यह कहा है । प्रश्न यह है कि यहां योगयवमध्यसे किसका ग्रहण किया जाय ? योगयवमध्यका ग्रहण किया जाय या जीवयवमध्यका । वीरसेन स्वामीने बतलाया है कि योगयवमध्यके अधस्तन भागसे उपरिम भाग असंख्यातगुणा होनेसे वहां चारों हानियां और चारों वृद्धियां सम्भव हैं और अन्तर्मुहूर्त काल तक जीवका वहीं रहना सम्भव है, इसलिये योगयवमध्य इस पद द्वारा उसीका ग्रहण करना चाहिये, जीवयवमध्यका नहीं । इसपर यह प्रश्न हुआ कि जीवयवमध्यके उपरिम भागमें जीवका अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना क्यों सम्भव नहीं है ? वीरसेन स्वामीने इसी प्रश्नका उत्तर देनेके लिये प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, इन छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यह सिद्ध किया है कि योगयवमध्य संज्ञित जीवयवमध्यके नीचेके भागसे उपरिम भाग मात्र विशेषाधिक है, इसलिये इसके उपरिम भागमें जीवका अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना सम्भव नहीं है । यही कारण है कि यहां योगयवमध्य पदसे उसीका ग्रहण किया गया है, जीवयवमध्यका नहीं ।

अथवा यहांके जीवोंके अल्पबहुत्वसे वह जाना जाता है । यथा—

जघन्य योगस्थानके जघन्य जीवनिषेकसे लेकर उत्कृष्ट योगस्थान तक जीव—

उक्कस्सजोगट्टाणे त्ति जीवणिसेगाणं संबिद्धी एसा । १६ । २० । २४ । २८ । ३२ ।  
 ४० । ४८ । ५६ । ६४ । ८० । ९६ । ११२ । १२८ । ११२ । ९६ । ८० । ६४ ।  
 ५६ । ४८ । ४० । ३२ । २८ । २४ । २० । १६ । १४ । १२ । १० । ८ । ७ ।  
 ६ । ५ । संबिद्धीए गुणहाणिअद्धानं चत्तारि । ४ । -जोगट्टाणद्धानं बत्तीस । ३२ ।  
 णाणागुणहाणिसलागाओ अट्ट । ८ । जवमज्झादो हेट्टा तिण्णि । ३ ।, उवरि पंच  
 । ५ । हेट्टुवरि अण्णोण्णव्भत्थरासिपमाणं अट्ट बत्तीस । ८ । ३२ । । पक्खेवभाग-  
 हारो चत्तारि । ४ । ♦ ।

संपहि अवहारकालपरूवणा कीरदे- एत्थ ताव जोगट्टाणसव्वजीवे जवमज्झजीव-  
 पमाणेण कस्सामो । तं जहा - जवमज्झगुणहाणिखेतं ठविय

४०	४०
६४	६४

निषेकोकी संदृष्टि यह है—

१६	३२	६४	१२८	६४	३२	१६	८
२०	४०	८०	११२	५६	२८	१४	७
२४	४८	९६	९६	४८	२४	१२	६
२८	५६	११२	८०	४०	२०	१०	५

संदृष्टिमें गुणहानिका अध्वान चार ४, योगस्थानका अध्वान बत्तीस ३२, नानागुणहानिशलाकायें आठ ८ यवमध्यसे नीचेकी तीन ३ और ऊपरकी पांच ५; नीचे व ऊपरकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रमाण क्रमशः आठ और बत्तीस ८, ३२, तथा प्रक्षेपभागहार चार ४ है ।

अब अवहारकालकी प्ररूपणा करते हैं— यहां सर्वप्रथम योगस्थानके सब जीवोंको यवमध्यके जीवोंके प्रमाणसे करते हैं । यथा— यवमध्यकी गुणहानिके क्षेत्रको

♦ दव्वतियं हेट्टुवरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोणं । जीवजवे चोद्दसमयबावीसं होदि बत्तीसं ॥ चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठं तदो य बत्तीसं । किच्चूणतिगुणहाणिविभजिददव्वे दु जवमज्झं ॥ गो. जी. २४५-४६-

८	६४	८
३२	६४	३२

६४	१६
६४	६४

८	६४	८
६४	६४	

एदेहि चदुहि विहाणेहि पादिय समकरणं करिय जवमज्झपमाणेण कवे गुणहाणीए तिण्णिचदुब्भागमेत्तजवमज्झाणि जवमज्झचदुब्भागो च उप्पज्जदि । तस्सेसा संबिट्ठी  $\left| \frac{३}{४} \right| \left| \frac{१}{४} \right|$  । पुणो बिदियादिगुणहाणिदब्बं पि पढमगुणहाणिदब्बमेत्तसंतं दाबूण समीकरणे कवे एदं पि तेत्तियं चव होदि  $\left| \frac{३}{४} \right| \left| \frac{१}{४} \right|$  । णवरि जहण्णजोगट्टाणजीवे मोत्तूण बिदियजोगट्टाणजीवप्पहुडि पढमगुणहाणी घेत्तव्वा । एवे वो वि मेलाविवे दिवडु-गुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि जममज्झदुभागो च उप्पज्जदि । तस्स संबिट्ठी

स्थापित कर और इन चार प्रकारों ( मूलमें देखिये ) से उसके खंड कर समीकरण करके यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके तीन बटे चार भाग मात्र यवमध्य और यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है । उसकी यह संदृष्टि है (  $\frac{३}{४}$ ;  $\frac{१}{४}$  ) ।

उदाहरण— यवमध्यकी गुणहानि ४१६; यवमध्य १२८;

यहां ४१६ में १२८ का भाग देनेपर ३ यवमध्य और एक यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है । इस प्रकार यवमध्यकी गुणहानिमें कुल  $३\frac{३}{४}$  यवमध्य होते हैं । यहां यव-मध्यकी गुणहानिके द्रव्यसे तृतीय गुणहानिके अन्तिम तीन स्थानोंका द्रव्य और चौथी गुणहानिके प्रथम स्थानका द्रव्य लिया गया है ।

फिर द्वितीयादि गुणहानिके द्रव्यका भी, इसमें प्रथम गुणहानिके द्रव्य प्रमाण असत् द्रव्य देकर, समीकरण करनेपर यह भी उतना ही होता है (  $\frac{३}{४}$ ;  $\frac{१}{४}$  ) । विशेष इतना है कि जघन्य योगस्थानके जीवोंको छोड़कर द्वितीय योगस्थानके जीवोंसे लेकर प्रथम गुणहानि ग्रहण करना चाहिये ।

उदाहरण— द्वितीयादि गुणहानिका द्रव्य ३४४, जो द्रव्य ऊपरसे मिलाया गया है वह ७२; कुल जोड़ ४१६; यहां भी ४१६ में १२८ का भाग देनेपर तीन यवमध्य और एक यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है । यहां जो ७२ संख्या प्रमाण द्रव्य ऊपरसे मिलाया गया है वह प्रथम गुणहानिका द्रव्य है । इसमेंसे जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण १६ घटा दिया गया है ।

इन दोनोंको ही मिला देनेपर डेढ़ गुणहानि मात्र यवमध्य और एक यवमध्यका द्वितीय भाग उत्पन्न होता है । उसकी संदृष्टि  $६\frac{१}{२}$  है ।

कुबो ? असंतेगचरिमगुणहाणिदव्वजवमज्झदव्वपवेसादो । एदाणि दो वि दव्वाणि मेलाविदे रूवाहियतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होति । तत्थेगरुवमवणेदव्वं पुध्वं प्पवेसिदजवमज्झस्स असंतस्स अवणयणट्ठं । १२ । एवमव्वुप्पणजणवुप्पाय-णट्ठं तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होति त्ति परुविदं । सुहुमबुद्धीए णिहालि-ज्जमाणे किच्चूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होति । तं जहा- जहण्णजोगट्ठाण-जीवेहि ऊणपढम-चरिमगुणहाणिजीवाणमेत्था-संताणमहियत्तुवलंभादो । तमहियदव्वं संबिट्ठीए चोद्दमुत्तरसदमेत्तं । ११४ । अत्थदो असंखेज्जाणि ३ जवमज्झाणि ।

उदाहरण—  $३\frac{१}{४} + ३\frac{१}{४} = ६\frac{२}{४}$  यवमध्य ।

यवमध्यसे उपरिम द्रव्यको भी यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतना ही होता है—  $६\frac{२}{४}$  यवमध्य, क्योंकि, यहां अविद्यमान एक अन्तिम गुणहानिका द्रव्य यवमध्योंके द्रव्यमें मिलाया गया है ।

उदाहरण— यवमध्यका उपरिम द्रव्य ८०६; अन्तिम गुणहानिका द्रव्य २६; कुल जोड़ ८३२ । यहां ८३२ में यवमध्यके द्रव्य १२८ का भाग देनेपर  $६\frac{२}{४}$  यवमध्य आते हैं । यवमध्यकी उपरिम गुणहानि ५ है । उनका कुल द्रव्य ८०६ मात्र होता है । किन्तु इसमें अन्तिम गुणहानिका द्रव्य दुबारा मिलाकर  $६\frac{२}{४}$  यवमध्य प्राप्त किये गये हैं ।

इन दोनों ही द्रव्योंको मिलानेपर एक अधिक तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं । उनमें पूर्व प्रवेशित अविद्यमान यवमध्यको कम करनेके लिये एक अंक कम करना चाहिये १२ ।

इस प्रकार अव्युत्पन्न जनोंके व्युत्पादनार्थ 'तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं' ऐसा कहा है । किन्तु सूक्ष्म बुद्धिसे देखनेपर कुछ कम तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं । इसका कारण यह है कि यहांपर जघन्य योगस्थानके जीवोंसे कम प्रथम व अन्तिम गुणहानिके जीवोंकी, जो यहां अविद्यमान हैं, अधिकता पायी जाती है । वह अधिक द्रव्य संदृष्टिमें एक सौ चौदह ११४ मात्र है । अर्थसंदृष्टिकी अपेक्षा असंख्यात यवमध्य प्रमाण है ।

उदाहरण—  $६\frac{२}{४} + ६\frac{२}{४} = १३$  यवमध्य । किन्तु इनमें यवमध्यकी संख्या १२८ दो बार सम्मिलित हो गई है अतः १ यवमध्य कम कर देनेपर कुल १२ यवमध्य रहते हैं ।

एदस्स अवणयणविहाणं वुच्चदे— जवमज्झस्स जदि एगरूवावणयणं लब्भदि तो चोदसुत्तरसदस्स किं परिहाणिं पेच्छामो त्ति पमाणेण फलगुणिविच्छाए ओवट्ठिदाए लद्धमेत्तियं होदि  $\left| \frac{१७}{१७} \right|$  । एदम्मि तिहि गुणहाणींहितो अवणिदे सेडीए असंखेज्जदि— भागेणूणतिण्णिगुणहाणीओ हींति । तांसि पमाणमेदं  $\left| \frac{१७}{६४} \right|$  । एदेण जवमज्जे गुणिदे बावीसुत्तरचोदसदमेत्तं संदिट्ठीए सब्बदब्बं होदि । १४२२ ।

अधवा जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तजहण्ण— जोगट्ठाणजीवाणं जदि एगं जवमज्झपमाणं लब्भदि तो किंचूणदिवड्डुगुणहाणिमेत्तजह— ण्णजोगट्ठाणजीवाणं किं लभामो त्ति सरिसमवणिय जवमज्झ— हेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा किंचूणदिवड्डुम्मि भागे हिदे असंखेज्जाणि जवमज्झाणि आगच्छंति । तेसि संदिट्ठी  $\left| \frac{११}{१६} \right|$  ।

फिर भी यह स्थूल दृष्टिसे परिगणना है। सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेपर ११४ संख्या कम होकर ११ से कुछ अधिक यवमध्य आते हैं।

अब इसकी हानिके विधानको कहते हैं— यवमध्य अर्थात् १२८ अंककी अपेक्षा यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो एक सौ चौदह की अपेक्षा कितनी हानि होगी, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर लब्ध इतना  $\frac{१७}{६४}$  होता है। इसको तीन गुणहानियोंमेंसे कम करनेपर जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग कम तीन गुणहानियां होती हैं। उनका प्रमाण यह है—  $११\frac{७}{६४}$  । इससे यवमध्यके गुणित करनेपर संदृष्टिमें सब द्रव्य चौदहसौ बाईस होता है १४२२ ।

उदाहरण— यवमध्यका प्रमाण १२८; गुणहानिका काल ४;

१२८ में १ की हानि होती है तो ११४ में कितनी हानि होगी, इस प्रकार त्रैराशिक करनेपर फलराशि १ को इच्छाराशि ११४ से गुणा करके उसमें प्रमाणराशि १२८ का भाग देनेपर  $\frac{१७}{६४}$  आते हैं। फिर इसे तीन गुणहानियोंके काल १२ मेंसे कम करनेपर  $११\frac{७}{६४}$  आते हैं और इसको यवमध्यके प्रमाण १२८ से गुणित करनेपर कुल योग— स्थानके जीवोंका प्रमाण १४२२ आता है।

अथवा, यवमध्यसे अधस्तन नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका जितना प्रमाण है उतने जघन्य योगस्थानके जीवोंका यदि एक यवमध्य प्राप्त होता है तो कुछ कम डेढ़ गुणहानिका जितना प्रमाण है उतने जघन्य योगस्थानके जीवोंका क्या प्रमाण प्राप्त होगा, इस प्रकार समान राशियोंका अपनयन करके यवमध्यकी अधस्तन अन्योन्या— भ्यस्त राशिका कुछ कम डेढ़ गुणहानिमें भाग देनेपर असंख्यात यवमध्य आते हैं। उनकी संदृष्टि  $\frac{११}{१६}$  है। कुछ कम उपरिम अन्योन्याभ्यस्त राशिका जितना प्रमाण

किंचूणवुरिमअण्णोण्णभत्थरासिमेत्तुक्कस्सजोगट्टाणजीवाणं जदि जवमज्जपमाणं लब्भदि तो किंचूणदिवड्डुगुणहाणिमेत्तुक्कस्सजोगट्टाणजीवाणं किं लभामो त्ति किंचूण-  
ण्णोण्णभत्थरासिणा किंचूणदिवड्डुम्मि भागे हिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजवम-  
ज्जाणि लब्भंति । तेसिं संदिट्ठी  $\left| \frac{१३}{६४} \right|$  । वो वि सरिसच्छेदं कादूण मेलाविदे एत्तियं  
होदि  $\left| \frac{९७}{६४} \right|$  । एवं तिसु गुणहाणीसु अवणिदे किंचूणतिण्णिगुणहाणिपमाणं होदि ।  
तस्स संदिट्ठी  $\left| \frac{७१}{६४} \right|$  । एदेण जवमज्जे गुणिदे सव्वदव्वं होदि । तस्स संदिट्ठी  
बावीसुत्तरचोद्दससदमेत्ता । १४२२ । । एवं किंचूणतीहि गुणहाणीहि ओवट्टिदे जेण  
जवमज्जमागच्छदि तेण जवमज्जपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे किंचूणतिण्णि-  
गुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं ।

है उतने उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका यदि एक यवमध्यके बराबर प्रमाण प्राप्त होता है तो कुछ कम डेढ गुणहानिका जितना प्रमाण है उतने उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका क्या प्रमाण प्राप्त होगा, इस प्रकार कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका कुछ कम डेढ गुणहानिमें भाग देनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भ्रम मात्र यवमध्य प्राप्त होते हैं। उनकी संदृष्टि  $\frac{१३}{६४}$  है। दोनोंके समान खण्ड करके मिलानेपर इतना होता है  $\frac{९७}{६४}$  ।

उदाहरण— अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशि ८ में यदि एक यवमध्य राशि है तो कुछ कम डेढ गुणहानिमें कितनी यवमध्य राशि होगी। यहां कुछ कम डेढ गुणहानिका प्रमाण =  $\frac{५१}{६४}$  ।

$$\frac{१३}{६४} \times \frac{९}{२} = \frac{११}{६४} \text{ यवमध्य भाग ।}$$

उपरितन प्रमाणके लिये कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि निकालनी है, अतः उपरितन ३२ अन्योन्याभ्यस्त राशिको गणितकी दृष्टिसे  $\frac{१३८}{६४}$  माना गया। यदि  $\frac{१३८}{६४}$  राशिमें एक यवमध्य राशि है तो कुछ कम डेढ गुणहानिमें कितनी यवमध्य राशि होगी। यहां कुछ कम डेढ गुणहानिका प्रमाण  $\frac{५१}{६४}$ ;

$$\frac{२६}{६४} \times \frac{९}{२} = \frac{१३}{६४} \text{ यवमध्य भाग ।}$$

$$\frac{११}{६४} + \frac{१३}{६४} = \frac{९७}{६४} \text{ ।}$$

इसको तीन गुणहानियोंमेंसे कम करनेपर तीन गुणहानियोंका कुछ कम प्रमाण होता है। उसकी संदृष्टि  $\frac{१२}{६४} - \frac{९७}{६४} = \frac{७१}{६४}$  है। इससे यवमध्यको गुणित करनेपर सर्व द्रव्य होता है। उसकी संदृष्टि चौदह सौ बाईस है—  $\frac{१२}{६४} \times \frac{७१}{६४} = \frac{१४२२}{६४}$  । इसे चूकि कुछ कम तीन गुणहानियोंसे अपवर्तित करनेपर यवमध्य आता है, अतः यवमध्यके प्रमाणसे सर्व द्रव्यके अपहृत करनेपर वह कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालसे अपहृत होता है, यह सिद्ध होता है।